"आर्त शांति: फला विद्या "

क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल , देहरादून

अंक 1 : अप्रैल , 2024

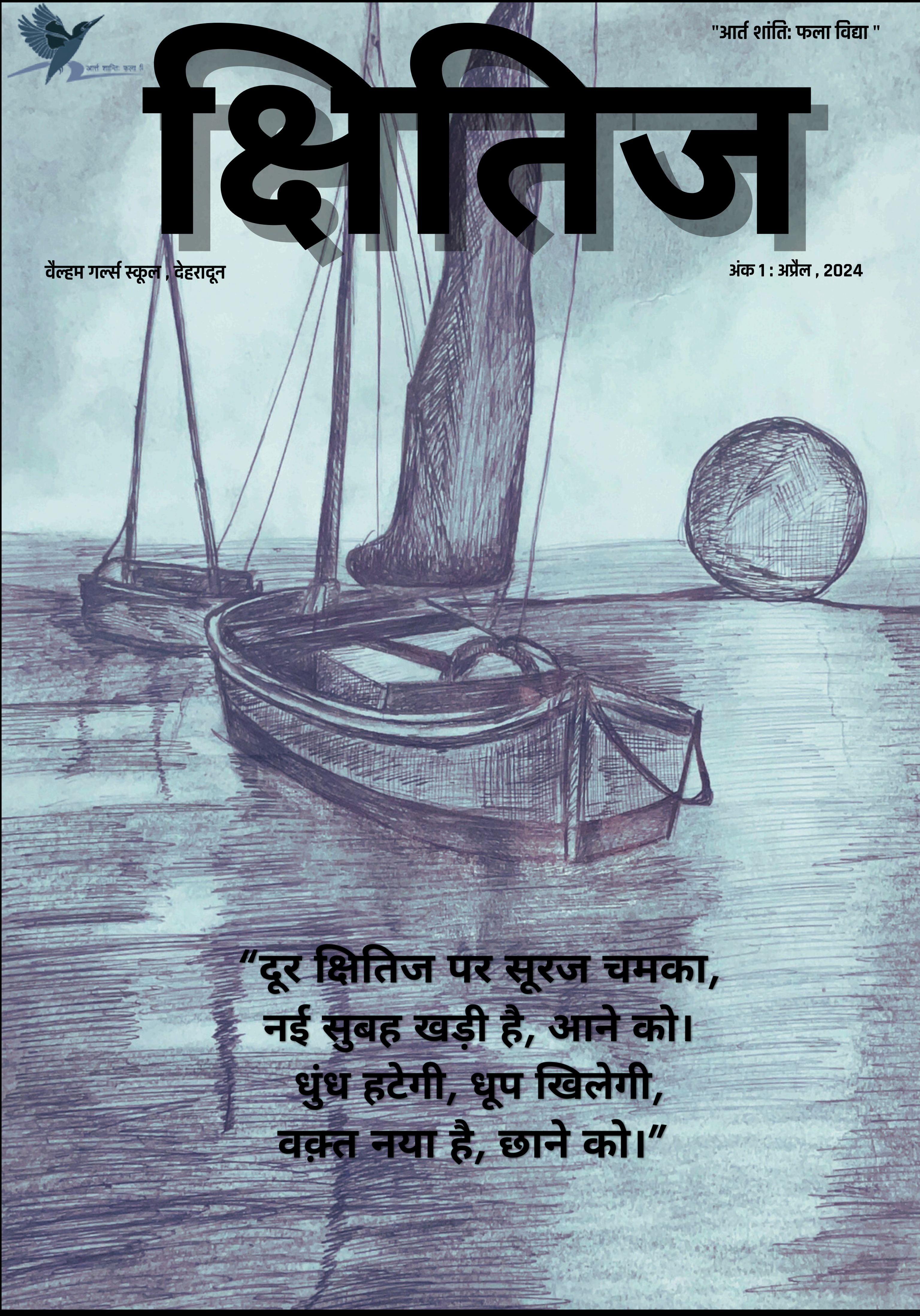

“दूर क्षितिज पर सूरज चमका,
नई सुबह खड़ी है, आने को।
धुंध हटेगी, धूप खिलेगी,
वक़्त नया है, छाने को।”

सम्पादिका की कलम से...

प्रिय पाठकों,
हेनरी फ्रेडरिक एमिएल ने कहा है ,"जो काम दूसरे लोगों को मुश्किल लगता है उसे आसानी से करना कला है, जो काम प्रतिभाशाली लोगों को असंभव लगता है उसे करना निपुणता है।"
कला क्या है? कला एक प्रकार का ध्यान है।कला ही जीवन का आधार है। कल्पना कीजिये उस बेरंग संसार की जहाँ न कोई कला है और न ही कोई साहित्यिक साधना और न ही संगीत के सुर। कला के बिना यह संसार और हम सब का जीवन व्यर्थ हो जायेगा, बेरंग हो जायेगा। हर एक क्रिया जो आपके भीतर के सौंदर्यबोध को जगाए, कला है। यही कारण है कि चाहे लेखक हो,गायक हो,नर्तक हो,नाटककार हो, मूर्तिकार हो और यहाँ तक की कोई सुघड़ गृहिणी ही क्यों न हो, ये सभी कलाकार हैं। इनकी कला साधना, इनके चारों ओर एक चुम्बकीय क्षेत्र को जन्म देती हैं, इसी कारण सामान्य जन इनसे आकर्षित हो जाते हैं।
मेरा मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कोई न कोई प्रतिभा छिपी है बस उसे खोजना आवयश्यक है। हर वस्तु को एक नए नज़रिये से देखकर उसे एक नया रूप प्रदान करना भी एक कला ही है। हर एक कला अपने आप में श्रेष्ठ है। यह कला ही है जो जीवन जीने का सही ढंग सिखाती है तो स्वयं से प्रेम करना और स्वयं का महत्त्व समझाती है। कला वह प्रेरणा है जो जीवन में आगे बढ़ने और ऊँचाइयाँ प्राप्त करने का साहस और हौंसला देती है।
मैंने कहीं पढ़ा था कि एक बहुत प्रसिद्ध कलाकार अपना कार्य करते हुए उस कार्य में इतना निमग्न हो गया कि उसे अपने आस-पास जो हो रहा था उसकी भी खबर नहीं हुई। कलाकार की इस बात ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया और मैं यह सोचने पर विवश हो गई कि कला वास्तव में व्यक्ति को बदल देने की क्षमता रखती है।
विद्यालय के इस प्रांगण में हम सभी निरंतर अनेक कलाएँ सीखते हैं और समयानुसार उन कलाओं का उचित समय पर अभूतपूर्व प्रदर्शन भी करते हैं। क्षितिज का यह अंक भी कला को समर्पित है,जहाँ अनेक लेखों में आपको कलाओं के दर्शन होंगे।
मैं क्षितिज के अपने इस अंतर्सदनीय संगीत और नृत्य प्रतियोगिता अंक में सभी वैल्हमाइट्स को शुभकामनाएँ देती हूँ और आशा करती हूँ कि आपके संगीत, नृत्य एवं स्वर वाद्ययंत्र की अनोखी झलक को देखकर सभी का हृदय आनंदित हो उठेगा।
आशा करती हूँ कि अन्य वर्षों के समान इस वर्ष भी आपको क्षितिज का यह अंक रोचक लगेगा।

मुख्य सम्पादिका
दीपिका जोशी

इस अंक में आगे

- धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय..
- कला और मनुष्य
- क्या आने वाले समय में हम मशीनों के गुलाम हो जाएँगे?
- यांत्रिक बुद्धि
- काश पाँच मिनट और मिल जाते !
- लिखनी है एक कविता
- शब्दों का संसार
- बीत गए चिट्ठी लिखने के दिन
- क्षितिज के उस पार
- यादों का सफर: श्रीमती कुसुम डंडोना
- नवागंतुक सदस्य
- कला का खेल
- रचनात्मकता से आध्यात्मिक चमत्कार
- बहाने बनाने की कला
- तोल मोल के बोल
- हम वैल्हमाइट्स की अद्भुत कलाएँ
- हवा में उड़ती हुई खबर आयी है कि
- चुन्नी की आत्मकथा
- कला या कला दीदी
- रंगमंच से विचारों की उड़ान: अभिनय के प्रसंग
- शब्दाहार :रंग के निराले रंग
- श्रद्धांजलि : प्रिय परमार सर
- शब्द भंडार

जीवन मंत्र

धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय ..

आप जब भी कोई नया काम आरंभ करते हैं,तब असफलताएँ हर मोड़ पर आपका स्वागत करने के लिए तैयार रहती हैं। प्रत्येक असफलता से सीख लेना आप पर ही निर्भर करता है। जीवन में हमेशा अनुकूल परिस्थिति नहीं रहती है और अनिश्चितता बनी रहती है। धीरज न हो तो मनुष्य टूट जाता है। अक्सर कठिन परिश्रम के बाद भी मनचाही सफलता नहीं मिल पाती है। ऐसी स्थिति में निराश और हताश होने की आवश्यकता नहीं होती है अपितु धैर्य रखकर और अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। जरा सोचिए कि अगर कोलंबस महासागर में अपना धैर्य खो देता तो क्या होता? क्या वह कभी एक नई दुनिया की खोज कर पाता। महीनों बाद तक जब वह अपने निर्धारित लक्ष्य पर नहीं पहुँच पाया तो उसके साथियों ने विद्रोह कर दिया और उसे समुद्र में फेंकने का भी प्रयास किया किन्तु कोलंबस ने हिम्मत नहीं हारी और अंत में धैर्य के कारण वह सफल हो गया।

आज के समय में यदि किसी व्यक्ति का धैर्य परखना हो तो उसे किसी कम्प्यूटर पर धीमे इंटरनेट के साथ काम करने के लिए कह दीजिये, उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सामने आ जाएगा। तीव्र इंटरनेट, तीव्र गाड़ियाँ, कम समय में अधिक से अधिक काम पूर्ण करना, समय की बचत के लिए हम हर संभव प्रयास करने के लिए तैयार रहते हैं लेकिन इस दौड़ में हम जीवन में धैर्य की महत्ता खोते जा रहे हैं। अब तो हमें फ़ूड भी फ़ास्ट नहीं, इंस्टेंट ही चाहिए होता है।

वह धैर्य ही है जो गंभीर मुश्किलों में यह विश्वास कायम रखता है कि आने वाला कल अच्छा और बेहतर होगा। अत: जीवन में धैर्य और परिश्रम से ही आगे बढ़ा जा सकता है। किसी ने सत्य ही कहा है -

फल पाने को वृक्ष सब सहता है।
मरुभूमि में भी सागर बहता है।
बस कर्म तुम्हारे हाथ में,
कर्म करो, बस कर्म करो।
धैर्य धरो, सखे! धैर्य धरो।।

अरुणिमा गोयल
AIII

कला और मनुष्य

कला, प्रतिभा और कौशल, हैं तो यह तीन विभिन्न शब्द पर इनका अर्थ मात्र एक ही है और वह है एक किसी के अंदर छुपी उस काबिलियत को खोजना जो उसका परिचय है, उसकी रूचि है और उसकी पहचान है। जैसे- सूर्य की कला है अपनी दिव्य किरणों से हमें आशीर्वाद देना, वहीं चिड़िया की कला है चहचहाना और अपनी मधुर वाणी से मंत्रमुग्ध कर देना। वर्षा की कला है एक किसान का घर बनाना व बादलों की कला है प्राणिमात्र को अपनी अमृतधारा से सराबोर कर देना। बात यदि मनुष्य की हो तो वह तो कलाओं का भण्डार है किन्तु जरूरत है उसे वह कला अपने अंदर खोजने की। प्रत्येक व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवन में किसी न किसी रूप में कला से जुड़ा रहता है। चाहे वह चित्रकारी हो, रंगमंच हो, फिल्में हों या संगीत; हजारों वर्षों से मानव जाति कला के इन रूपों को अपने जीवन का हिस्सा बनाए हुए है। हमारी रुचियाँ न केवल व्यक्तिपरक होती हैं बल्कि सांस्कृतिक मानदंडों, शिक्षा और प्रदर्शन से भी प्रभावित होती हैं।

दूसरे शब्दों में आप जिसकी भी प्रशंसा करें वह कला बन जाती है। यदि आपको पत्थरों का एक ढेर दिखे तो आप उसे ढेर ही समझ सकते हैं परंतु किसी ने उनको व्यवस्थित और सँजो कर रख दिया तो आप उसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकेंगे और वही पत्थरों का ढेर एक कलाकृति का रूप ले लेता है। एक कागज पर रंग बिखेरने से और उसमें एक विशेष अर्थ देखने से वह कला का रूप ले लेती है। कला संस्कृति को दर्शाती है, संस्कृति को प्रसारित करती है और इसको आकार देती है।

सौंदर्य के प्रति आकर्षित होकर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना ही कला है और यदि यह कहा जाए कि मानव जीवन की चिरसंगिनी यह कला ही है तो अत्युक्ति नहीं होगी, क्योंकि यह मानव जीवन के साथ अटूट रूप में बँधी हुई है। मनुष्य का तरीके से उठना-बैठना, चलना-बोलना, खाना-पहनना और यहाँ तक सजना-सँवरना आदि भी एक प्रकार की कला ही है।इस संबंध में भर्तृहरि का लिखा हुआ यह प्रसिद्ध श्लोक मानव जीवन में कला के महत्व पर प्रकाश देते हुए कहता है -

''**साहित्य संगीत कला विहीन:,साक्षात् पशु: पुच्छ विषाण हीन:।।"**
अर्थात साहित्य संगीत और कला से विहीन व्यक्ति पूँछ के बिना साक्षात पशु के समान ही होता है अत: हम मनुष्यों को सदैव यह प्रयास करना चाहिये कि जीवन में हम भी किसी न किसी कला से अवश्य जुड़े रहें।

आशी ढंढारिया
PRE SC

कृत्रिम मेधा

क्या आने वाले समय में हम मशीनों के गुलाम हो जाएँगे ?

आजकल मात्र एक ही शब्द की चर्चा चहुँ ओर है और वह है- आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस जिसका मुख्य कार्य हमारे जीवन को सरल बनाना है। पिछले कुछ समय से विज्ञान का एक नया क्षेत्र तीव्रता से उभरा है और वह है - कृत्रिम मेधा, जिसे हम आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस या एआई के नाम भी जानते हैं। वे कार्य जो हम नहीं कर पाते अथवा जिनमें हमारा बहुत समय व्यर्थ होता है,वे पलक झपकते ही समाप्त हो जाते हैं। कालांतर में आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि हमें कम से कम हाथ-पैर हिलाने पड़ें और बैठे - बैठे ही हमारे सब काम होने लगें। आज बुद्धिमान मशीनें कारों को नियंत्रित कर रही हैं, वाद्य रचनाएँ तैयार कर रही हैं और शतरंज में इंसान को शिकस्त दे रही हैं।

बात सुनने में तो बहुत अच्छी लगती है, लेकिन इसमें अनेक ख़तरे भी छुपे हुए हैं। कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में उन्नति की गति को देखकर आश्चर्य होता है और भविष्य के बारे में चिंता भी होती है। चिंता का विषय यह है कि एआई और अत्याधुनिक मशीनें मेहनतकशों की दुनिया में भारी बदलाव कर सकती हैं और कर रही हैं। कार्यालय के कार्यों और उद्योगों में अत्याधुनिक मशीनों का प्रयोग बढ़ने से लोगों के समक्ष रोज़गार के अवसर धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं और भविष्य में यह ख़तरा और बढ़ने वाला है।

प्रश्न यह है कि क्या एआई कैंसर जैसे असाध्य रोग भगा पाएगी अथवा विश्व में शांति स्थापित करेगी, जलवायु से संबंधित विपदाओं को रोकेगी या मानव जाति का विनाश करके पृथ्वी पर अधिकार कर लेगी? विश्व को नियंत्रित करने वाली अत्यंत बुविकसित मशीनों की बात इस समय साइंस फ़िक्शन जैसी लगती है। क्या भविष्य में ये मशीनें अनियंत्रित हो कर मानव जाति के समक्ष ख़तरा तो नहीं उत्पन्न कर देंगी ? यह एक विचारणीय प्रश्न है !

कृपा बुद्धिराजा
AIII

यांत्रिक बुद्धि

चारों ओर चर्चा का जोर है,
कृत्रिम बुद्धिमत्ता का शोर है।
मेरे उद्वेलित मन ने पूछा,
क्या ये भावों का चोर है!
थोड़ा असहज होकर सोचा मैंने,
क्योंकि सोचना तो पड़ता है।
मन के इस असमंजस को,
उत्तर देना तो बनता हैं।
किया निर्माण हमने इसका,
जटिल प्रश्न सुलझाने को।
यन्त्र- बुद्धि के संयोग से,
सरल मार्ग तलाशने को।
सफल हम हुए भी बहुत,
और विकास अभी भी जारी है।
पर ध्यान रहे सदैव यह,
इसका चरित्र दो धारी है।

कृपा बुद्धिराजा
AIII

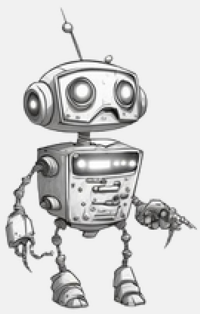

काश पाँच मिनट और मिल जाते ....

यह एक सच्ची वैल्हमाईट की कहानी है, जिसका दिन शुरू होता है - सूर्योदय से भी पहले और अगले ही क्षण वह पाती है स्वयं को उस खेल के मैदान में जहाँ, गिरते उठते हुए कभी दौड़ती है तो कभी करती है कसरत। फिर आरंभ होता है उस क्षण का जहाँ वह सुबह के नाश्ते से पहले छिपती हुई अपने आपको निरीक्षण से बचाती रहती है लेकिन फिर भी पकड़ में आ ही जाती है।
अब आरंभ होते हैं वह आठ घंटे जहाँ वह हर पल नींद में रहती है और तभी सावधान होती है,जब अध्यापिका पूछती है- बेटा,आपका गृहकार्य कहाँ है? इस से जैसे ही राहत मिलती है समय आता है विभिन्न कलाओं और खेलों को सीखने का किन्तु यह सफर यहीं समाप्त नहीं होता इसके बाद अपने सदन को जिताने की चाह में वह कड़ी मेहनत करने पहुँच जाती है अंतर-सदनीय नृत्य और गीत के अभ्यास के लिए और वह भी सीनयर्स के सामने। उसका सफर यहीं नहीं रुकता लगातार वह ऑडिशन देती है उन अनगिनत प्रतियोगिताओं का जिसमें वह भाग लेने के लिए आतुर रहती है। फिर चाहे राउन्ड स्क्वायर या फिर अंतर्विद्यालय प्रतियोगिता।

देर रात सभी का अभ्यास करके वह जब अपने सदन सोने के लिए आती है तो उसे याद आता है आज उसने वह उपन्यास नहीं पढ़ा, जिसे कल पुस्तकालय में लौटाना है और फिर टॉर्च की रोशनी में उसे पढ़ने का प्रयास करते-करते फिर दीदी की आवाज आती है- उठो सवेरा हो गया। बस यही सोचती है बेचारी– काश मिलते मुझे भी पाँच मिनट!

युक्ति पवन बेगानी
AIII

लिखनी है एक कविता

दीदी ने लिखी कविता, उसे देखकर मुझे भी सूझा,
क्यों न लिखूँ मैं भी एक प्यारी सी कविता।
जो हो प्यारी और लगे सभी को लुभावनी ।
पर हाय! मुझे तो कुछ न सूझ रहा,
पर लिखनी तो है मुझे भी एक कविता।
लिखते लिखते हुई कलम की स्याही भी समाप्त,
हुए पन्ने भी बरबाद कई,
पर आया न मुझे समझ,
कैसे लिखूँ मैं एक कविता।
माँ का भी लिया सुझाव,
पिता से भी कर लिया मशवरा।
पर फिर भी न मन में आया कोई विचार प्यारा,
तय तो मैनें कर लिया है,ठान लिया है पक्का,
मन भी बना लिया है न थमूँगी, न रुकूँगी
लिखकर रहूँगी आज मैं एक कविता !

अन्वी पोद्दार
SC

शब्दों का संसार

शब्द में ही मान है, शब्द ही अपमान है,
शब्द में छिपा है अभिमान;
शब्द में ही वाद है, शब्द ही विवाद है,
शब्द मधुर रचता संवाद है ।
शब्द ही तो राज़ है, शब्द ही आवाज है,
शब्द से ही राग है, शब्द ही आलाप है,
शब्द ही प्रभाव है, शब्द दुष्प्रभाव है,
शब्द है गलत, तो दे घाव;
शब्द ही दवा है, शब्द ही दुआ है,
शब्द में समाया है सद्भाव।
शब्द ही मिसाल है, शब्द बेमिसाल है,
शब्द की है दुनिया विशाल;
शब्द ही सवाल है, शब्द ही जवाब है,
शब्द के है अर्थ लाजवाब।
शब्द है तो भक्ति है, शब्द अभिव्यक्ति है,
शब्द की है शक्ति अपार;
शब्द मन-प्रकृति है, शब्द में विकृति है,
शब्द तोड़े-जोड़े संसार।

कृष्णाडी गरिया
AIII

शैक्षिक भ्रमण

बीत गए चिट्ठी लिखने के दिन!

क्या आपने भी कभी सोचा हैं कि क्यों छोड़ दिया हमने चिट्ठी लिखना? चिट्ठी या पत्र-लेखन आज विलुप्ति के कगार पर खड़ी है। चिट्ठी लिखना अर्थात मन की बात, या कोई हार्दिक संदेश अपने हाथों से क़लम की नोक से पन्नों पर उंडेलना और मन की भावनाओं को चिट्ठी के पंखों पर बैठाकर कहीं दूर बैठे किसी अपने के न सिर्फ़ हाथों तक अपितु उसके दिल तक पँहुचाना। कितना अपनापन होता है चिट्ठियों में! पढ़ने वाला पत्र में लिखे भावों से कभी उत्साहित, कभी उत्सुक, कभी ख़ुश, कभी दु:खी,कभी शांत तो कभी भावविह्वल हो कर रो भी पड़ता है।

पुराने समय में चिट्ठी मन लगाने का, मन की बात कहने का एक कारगर तरीक़ा था। बड़े-बुज़ुर्गों का कितना ही समय चिट्ठियाँ लिखने, उनके गंतव्य तक पहुँचने की ख़बर मिलने और उन चिट्ठियों के जवाब का इंतज़ार करने में व्यतीत हो जाता था। डाकिए का इंतज़ार ऐसे होता था,जैसे कोई बहुत ख़ास आने वाला हो। मैं भी जब वैल्हम में आई तो डाकिया अंकल का इंतज़ार करती थी क्योंकि मुझे भी पत्र का इंतज़ार रहता था।

यह अनुभव मुझे विद्यालय से पोस्ट ऑफिस के शैक्षिक भ्रमण के दौरान हुआ कि क्यों हमने अपनों को पत्र लिखना छोड़ दिया और क्यों हम उस आत्मीय अनुभूति से वंचित हो गए हैं? इसी के साथ मैंने भी प्रण लिया कि महीने में एक बार ही सही पत्र लिख कर अपने स्नेही जन से कुशल क्षेम जरूर पूछूँगी और उनके पत्र का इंतजार अवश्य करूँगी ।

मान्या पाठक
BI

क्षितिज के उस पार...

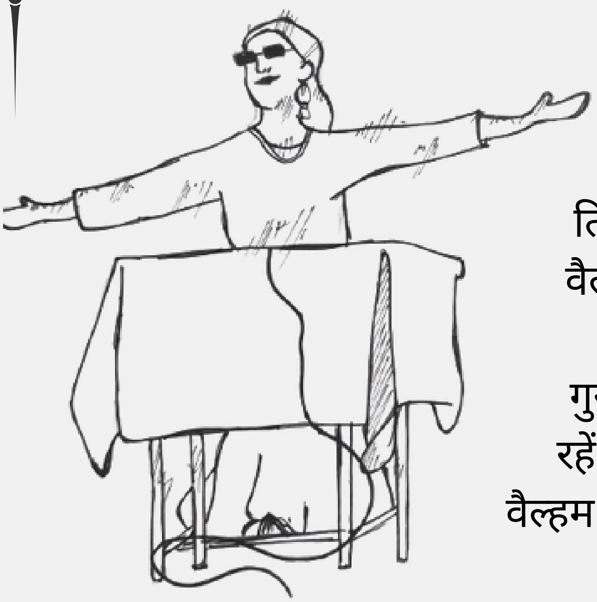

चिरैयाँ हैं हम,
रंग -बिरंगी, छोटी - छोटी
गर्वीली चिरैयाँ हैं हम।
वैल्हम है प्यारा,
घरौंदा हमारा।
मिस लिनेल ने बुना,
तिनका – तिनका चुना।
वैल्हम के आँगन में गूँजे,
मधुर गीत हमारे।
गुरुजन से आशीष पाएँ,
रहें हम सदा उनके सहारे।
वैल्हम के पेड़ों की घनी छाँह तले
पलें बढ़ें हम,
ज्ञान की ज्योत जलाएँ ।
झूमें, नाचे, गाएँ,
हर खुशी, हर गम बाँटें।
दीन दुखियों के दर्द हरें हम,
इसके आँगन में खेलें,
नैनों में सँजोए, सपने सलोने।
ऊँची उड़ान, ऊँचे इरादे,
किन्तु भूलें न कभी
धरती से किए वादे।
मेरा तेरा का भेद हटा,
सबको गले लगा।
सँभालने परिवर्तन की कमान,
करने सृष्टि का उत्थान,
फैलाकर पंख अपने,
क्षितिज के उस पार,
भरेंगे हम उड़ान !!
भरेंगे हम उड़ान !!

श्रीमती कुसुम डंडोना

यादों का सफर: श्रीमती कुसुम डंडोना के संग

कुछ दिनों पूर्व हमारे विद्यालय की डीन पैस्टोरल केयर एवं हिन्दी विभाग की श्रीमती कुसुम डंडोना मैम ने अपने चालीस वर्षों का सफर वैल्हम में पूर्ण किया। मिसेज डंडोना ने न केवल हम सबकी माँ के समान देखभाल की अपितु उन्होंने हम सबका सदैव मार्गदर्शन भी किया। जाते-जाते हमने उनसे कुछ प्रश्न पूछे जिनके उन्होंने बहुत ही रोचक उत्तर दिए। प्रस्तुत है उनसे बातचीत का कुछ अंश :

दीपिका और गौरी - इस विद्यालय में आपका चालीस वर्षों का सफर कैसा रहा ?

श्रीमती डंडोना - यह सफर बहुत अद्भुत था। इसमें बहुत सुंदर पल और अनगिनत सीखने के अवसर मिले। मैंने निरंतर नए ज्ञान की खोज की और उसे अपनाया। इस सफर ने मुझे यह सिखाया कि शिक्षकों को कभी भी सीखने से रुकना नहीं चाहिए, क्योंकि हर क्षण में नया ज्ञान छिपा होता है। इस सफर को मैं एक सुंदर यात्रा की तरह अनुभव करती हूँ, जो मुझे जीवन में इस विद्यालय से जोड़ते रहेंगे। "

दीपिका और गौरी- छात्रावास में बच्चों के साथ आपके क्या यादगार अनुभव रहे हैं ?

श्रीमती डंडोना - छात्रावास में बच्चों के साथ मेरे कई यादगार अनुभव रहे हैं। मैंने रोज़ नए-नए पलों का आनंद उठाया है। जब मैं ओरियल सीनियर की एच एम थी, तो बच्चे काफी शैतान थे। एस सी का फाइनल टर्म चल रहा था और किसी ने छात्रावास की घंटी छुपा ली थी। उस समय श्रीमती उनियाल जो कि हमारी मैट्रन थीं, उन्होंने मुझसे कहा, 'घंटी तो गायब हो गई? मैं तो इतनी देर से थाली बजा रही हूँ।' फिर बाद में पता चला कि यह एक प्रचलित प्रथा थी कि बच्चे अक्सर घंटी छुपा देते थे। यह सुनकर मैं चंडी बन गयी और मैंने उन्हें बहुत डाँटा । ऐसी बहुत सी छोटी-छोटी घटनाएँ हैं जिन पर मुझे आज बहुत हँसी आती है।

दीपिका और गौरी - इतने वर्षों में आपको कौनसी एक मज़ेदार घटना याद है जो आप हमारे साथ साँझा करना चाहेंगी ?

श्रीमती डंडोना - अंतरसदनीय संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम की बात है। हमारे सदन को लोक नृत्य में एक गुजराती नृत्य मिला था। एक लड़की कृष्ण बनी थी और उसे झूले पर बैठना था। श्रीमती नेगी ने कृष्ण को देखा और कहा, "इसकी माला कहाँ है?" मैंने कहा-"आपने तो माला के बारे में कुछ बताया ही नहीं था। अभी हमारे पास माला तो नहीं है।"उन्होंने कहा- मुझे नहीं पता, मैं कृष्ण को मंच पर बिना माला के नहीं भेजूँगी। हमारा नृत्य कुछ ही क्षणों में शुरू होने वाला था। मैंने फ़टाफ़ट एक बच्ची को बुलाया और कहा कि चल कोई माला का इंतजाम करते हैं। हमने पूरे विद्यालय का चक्कर लगा लिया परन्तु माला नहीं मिली। अचानक मेरी नज़र मिस लिनेल पर पड़ी। तान्या भी उसी दिशा में देख रही थी। मिस लिनेल पर एक ताज़े फूलों की माला चढ़ी थी। हम दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और इशारों ही इशारों में एक दूसरे के मन की बात समझ गये। मैंने कहा तान्या नहीं! उसने बोला कोई बात नहीं हम वापस ले आयेंगे। उसने सबसे पहले मिस लिनेल को देखकर क्षमा माँगी और हम माला ले कर रफूचक्कर हो गए। जैसे ही नृत्य समाप्त हुआ हम फुर्ती से मिस लिनेल की मूर्ति के पास पहुँचे और जल्दी से उनसे माफ़ी माँगकर कर उन्हें माला पहना दी। जब तक हम वापस पहुंचे तब हमें पता चला कि हमें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। लगता है कि मिस लिनेल का आशीर्वाद मिल गया था।

दीपिका और गौरी - आप पहले की छात्राओं और अब की छात्राओं में क्या अंतर महसूस करती हैं?

श्रीमती डंडोना -आज की छात्राएँ अधिक पेशेवर और करियर को ले कर सतर्क हैं। उनके लिए भविष्य में कौन सा करियर या कॉलेज चुनना है, यह महत्वपूर्ण है।आज की छात्राएँ अधिकतर लैपटॉप की प्रशंसक हैं लेकिन दोनों पीढ़ियों के बच्चे अत्यंत उत्साही और तेज दिमाग वाले हैं।

दीपिका और गौरी - आप हम सभी छात्राओं को क्या सन्देश देना चाहेंगी?

श्रीमती डंडोना -मैं बस यही कहना चाहूँगी कि कितने भी ऊँचे हो जाओ, धरती से जुड़े रहना चाहिए, विनम्रता मत भूलो, सभी का सम्मान करो। जब आप कुछ योग्य बन जाओ, तो समाज और देश के लिए ज़रूर कुछ करना। अपनी मिट्टी को कभी मत भूलना।

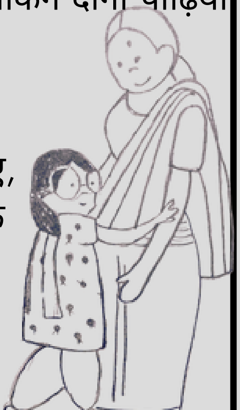

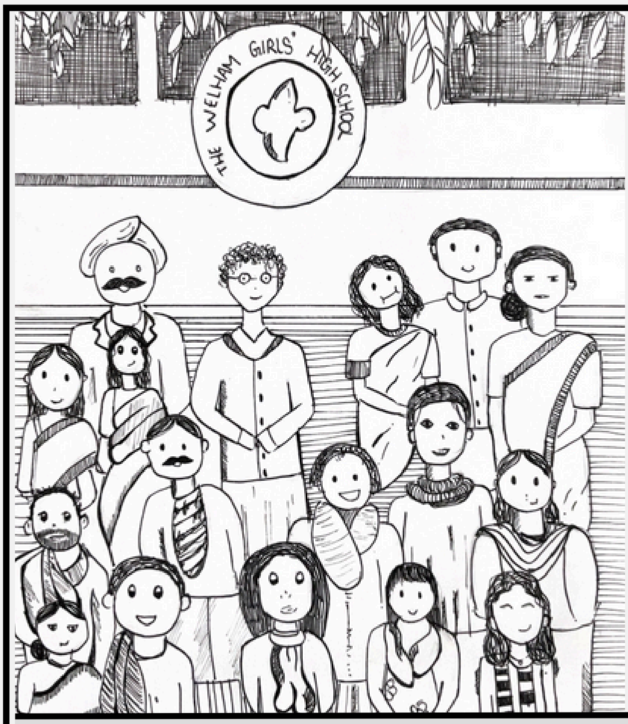

नवागंतुक सदस्य

श्रीमती दीक्षा गर्ग

श्री अनुज भारद्वाज

श्रीमती सोहिनी बंदोपाध्याय

श्री मुदित बौंठियाल

श्रीमती लिपि रमोला

सुश्री लक्षिका पांडे

श्री पवन कुमार देवली

आप सभी का क्षितिज की ओर से वैल्हम परिवार में हार्दिक स्वागत है ।

अच्छा तो हम चलते हैं !

अभिनय मनुष्य के अस्तित्व की खोज है, जो एक दर्पण बनकर एक माध्यम से आत्मविचार और सहानुभूति को प्रेरित करता है। ऐसी ही प्रकाश स्तम्भ के रूप में रहीं हैं श्रीमती सीमा सिधवानी।हमारी नाट्यशास्त्र शिक्षिका के रूप में जिन्होंने सदैव हमारा मार्गदर्शन किया।

सिधवानी मैम ने अपनी असीम ऊर्जा और उत्साह से हमारे नाट्य कक्ष या यों कहें तो छोटा आँगन, को एक ऐसे स्थान में बदल दिया जहाँ अनेक सपनों और कल्पनाओं ने ऊँची उड़ान भरी। शिक्षण के प्रति उनका अनोखा दृष्टिकोण केवल पंक्तियाँ सुनाने या मंच के निर्देशों को पूर्ण करने तक ही सीमित नहीं था।

प्रभावशाली नाटकीय क्षमता के अतिरिक्त मैम के पास एक अद्वितीय वस्तु थी और वह थी - हम सब के साथ प्रगाढ़ता का संबंध। हम आशा करते हैं कि आप समय समय पर विद्यालय आ कर हम सबको अभिनय कला के हुनर भविष्य में भी सिखाती रहेंगी।

गौरी रावत
SC

संगीत स्वर और लय के द्वारा अपने भावों को प्रकट करने की रसानुभूति है और यह सुमधुर भाव प्रकट करने सिखाए हैं हमें सायोनी मैम ने, जो हमेशा हमारे लिए एक शिक्षिका से बढ़कर रही हैं। एक मित्र की तरह उन्होंने हमारी सारी परेशानियाँ सुनी हैं और उनके उपाय भी सुझाएँ है। हम सभी आपको बहुत प्रेम करते हैं और हमेशा करते रहेंगे। हम सभी ने न केवल आपसे संगीत सीखा है अपितु अपने बहुत सारे अनुभव भी आपसे सांझा किए हैं।

आपकी संगीत प्रतिभा और प्रेरणास्पद वाक्यों ने हमें हमेशा प्रेरित किया है। आपने उन क्षणों में हमारा साथ दिया है जहाँ हमें खुद को बेहतर ढंग से समझने की ज़रुरत थी। हम आपके समर्पण और प्रतिबद्धता के हमेशा आभारी रहेंगे। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं ।

अनुष्का अरोड़ा
SC

कला का खेल

अँधेरी रात,तूफानी पलों में जो,
उम्मीद की किरण उठकर आती है।
सपनों की उड़ान, अद्भुत कल्पनाएँ
जो सपनों के साझे में समाती हैं ।

धर्म-जात की न कोई कार्रवाई है,
न भेद भाव का कोई काम है।
अभिलाषाओं ने यह दुनिया बनाई है,
अपनी कला ही सबकी पहचान है ।
प्रतिदिन की उस कठिन लड़ाई में,
जिसने इंसान को इंसानियत सिखाई है।

जन्मांध को स्वरों से मिलाया,
और संगीत की दुनिया उसे दिखाई है ।
विकलांग को कलम ने दिया सहारा
जहाँ एक पन्ना बना उसका रास्ता।
जिसने अपनी कला को समझा समझो,
उसी ने गगन छुआ और ऊँचाइयाँ पाई हैं।

तो आइये चलिए इस नयी दुनिया में,
जहाँ हर जगह है आशाओं ने खुशियाँ फैलाई हैं।
कला की इस छोटी सी दुनिया में,
सबने अपनी असली जन्नत पाई है ।

श्रीना गुलाटी
SC

हवा में उड़ती हुई खबर आयी है कि ...

लड्डू (कबूतर) को केले खिलाये जा रहे हैं ।

प्रदीपिका और जानवरों के हो रहे हैं रिश्ते गहरे,

पैर में दर्द का इलाज, वोलिनी !(चित्रांगदा)
पेट में दर्द का इलाज, वोलिनी !
सर में दर्द का इलाज, वोलिनी !
सारे दर्दों का इलाज है सिर्फ, वोलिनी!

बाबा सर:मेरे पास एक ऐसी तरकीब है जिससे तुम्हारी सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी।
विद्यार्थी : क्या ?
बाबा सर: सूर्यास्त के बाद खाना छोड़ दो।
विद्यार्थी : परेशानियाँ तो मन की हैं सर, पेट की नहीं!

ऑडी में पूछा गया प्रश्न - दिल्ली यूनिवर्सिटी के दिल्ली से बाहर कितने कॉलेज हैं ?

A2 : दिल्ली से ग़ज़ियाबाद कितना दूर है?
अचिन सर : जितना ग़ज़ियाबाद से दिल्ली दूर है।

एक नए BII (गणित की कक्षा में) :अगर मैं यहाँ से भाग जाऊँ तो घर कितनी देर में पहुँचूँगी ?
कंचन मैम : अरे! मैं अब स्थान की दूरी वाले प्रश्न कभी नहीं समझाऊँगी।

रिद्धि : मेरी ज़िन्दगी का सफर काफी मज़ाकिया है, मेरे अलावा सभी हँस रहे हैं ।

ओजस्वी : स्पोर्ट्स जाना ज़रूरी है?
निम्रत (कप्तान) : ओजस्वी तुमको एथलेटिक्स में न आने के कारण से निकला जा रहा है।

एक्सचेंज विद्यार्थियों को **"गुलबाब"** (गुलाब) जामुन बहुत अच्छे लगे

चुन्नी की आत्मकथा

मैं एक चुन्नी हूँ।"तुम्हारी चुन्नी कहाँ है?""अपनी चुन्नी को ठीक करो!"तुम्हारी चुन्नी गंदी हो गई है, बदलो इसे!""देखो! वह नीली चुन्नी वाली वेल्हमाईट है" ।
मैं एक चुन्नी हूँ, ऐसी वैसी चुन्नी नहीं, एक वैल्हमाइट की चुन्नी हूँ।
सुबह सुबह मुझे अपनी अलमारी के अँधेरे से निकाल कर दीदी के हाथों में सौंप दिया जाता है। मेरे कानों में दीदी के मधुर संगीत के जैसे स्वर पहुँचते हैं " हे राम! यह बच्चे रात को क्यों चुन्नी नहीं देते!अब मैं घर जाऊँ या इनकी चुन्नी प्रेस करूँ!
मैं केवल एक चुन्नी नहीं सारे बीटूज की छात्राओं की एक बड़ी परेशानी हूँ। मैं एक वैल्हमाईट का सुंदर वस्त्र हूँ ।मैं ही 'टग ऑफ वार' की रस्सी। मैं ही बास्केट बॉल की डायमंड जुबली के समय सभी का उत्साह बढ़ाती हूँ ।
मैं एक थकी हुई वैल्हमाइट का तकिया हूँ जो उन्हें सपनों की दुनिया की सैर कराती है। मैं ही कूदने की रस्सी हूँ और मैं ही धूप से बचने का सहारा भी हूँ । कोई मुझे आगे खिसकाता है,तो कोई पीछे खिसकाता है। कोई मुझसे आँसुओं का सैलाब पोंछता है तो कोई अपनी हँसी दबाता है ।
रात को जब थक कर बिस्तर पर आते हैं वैल्हमाइट ,भूल जाते हैं मुझे और छोड़ आते हैं दूर कहीं पर। सुबह जब आँख खुले तो खोजने में मुझे निकाल देते हैं आधा समय। मैं होती हूँ कभी बड़े आँगन में तो कभी समर हाउस के किसी कोने में,किसी और की अलमारी में,तो कभी ऑडी की सीढ़ियों में! सोचती हूँ कि आकर ढूँढे मुझे भी कोई !
प्रिय वैल्हमाइट मुझसे परेशान न हो।समझो इस बात को,आखिर मैं चुन्नी हूँ ,ऐसी वैसी चुन्नी नहीं, एक वैल्हमाइट की पहचान हूँ।

नविका जिंदल
AI

कला या कला दीदी

मेरी हिंदी शुरुआत में काफी कच्ची रही है तो "कला" शब्द सुनते ही सबसे पहले हमारे फ्लाइकेचर डोर्म में रहने वाली कला दीदी का ही ध्यान आया। हमारे जीवन में कई ऐसे लोग होते हैं जिनका हमारे साथ एक विशेष रिश्ता होता है। इन रिश्तों में वह प्रेम और अपनत्व होता है जो हमें अपार खुशियाँ देता है। ये रिश्ते अक्सर हमारे घर के बाहर की दुनिया से जुड़े होते हैं। एक ऐसा ही प्रेम का बंधन है मेरे और 'कला दीदी' के बीच।

मुझे खेलने कूदने में कोई दिलचस्पी नहीं है। अक्सर मेरे सहपाठी मेरी इन गंभीर भावनाओं को नहीं समझते परन्तु कला दीदी हमेशा मुझे समझती हैं। उन्हें पता है कि जो सपने मैं आँखें बंद करके देख सकती हूँ उन्हें सुबह आँखें खोलकर साकार नहीं कर सकती। मेरी इस अत्यधिक सोने की आदत का कला दीदी बिल्कुल भी बुरा नहीं मानतीं और उन्होंने कभी भी अपना धैर्य नहीं खोया और मुझे समय से हर कार्य करने के लिए भेजा है। कला दीदी की सबसे ख़ास बात उनकी वे बातें है जो उनको सबसे अलग करती हैं एक बार मेरे कुछ दोस्त और मैं आधी रात को एक बेंच पर बात कर रहे थे। कला दीदी ने हमें सोने के लिए कहा था पर हमने मना कर दिया था। अचानक हमें कुछ आवाज़ आने लगी हम डर के मारे अंदर भागकर सो गए। अगले दिन पता चला कि यह तो कला दीदी की ही करामात थी।

सच कहूँ तो कला दीदी इस पूरे स्कूल में हमारी वह साथी हैं जिनके बिना दिन अधूरा लगता है और जिनकी आदत हमें कब लग गयी पता ही नहीं चला।

श्रीम मिगलानी
SC

कला चिकित्सा : रचनात्मकता से आध्यात्मिकता की ओर

क्या आपने कभी कला चिकित्सा के बारे में सुना है? अगर नहीं तो चलिए मैं आपको बताती हूँ कि ये नई कला कौन सी है? कला चिकित्सा रचनात्मकता के जरिए चिकित्सा की प्रक्रिया को मनोरंजक और सुधारात्मक बनाती है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें कला और चिकित्सा को एक साथ मिलाकर रोगियों को राहत और स्वास्थ्य को सुधारने का प्रयास किया जाता है।

कला चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य है मानसिक स्वास्थ्य को सुधारना और चिकित्सा की प्रक्रिया को सुगम बनाना। रचनात्मक कार्य करके व्यक्ति की भावनाओं और भावनात्मक स्थितियों को व्यक्त किया जाता है जिससे उसे मानसिक रूप से आनंद का अनुभव होता है।

कला चिकित्सा में चित्रकला, मूर्ति, डिज़ाइन, नृत्य, संगीत आदि शामिल हैं, जो भावनाएँ व्यक्त करने और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार का माध्यम बनते हैं। कला चिकित्सा का एक बड़ा लाभ यह है कि यह एक मनोरंजक तरीका है जिससे लोग चिकित्सा की प्रक्रिया को अधिक सुलभता से स्वीकार कर सकते हैं। रचनात्मक कार्य से लोग भावनाएं साझा करते हैं और आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। तनावग्रस्त व्यक्ति को कला चिकित्सा से चित्र बनाने का सुझाव दिया जा सकता है, जिससे वह अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकता है और तनाव से राहत पाता है। कला चिकित्सा एक रोमांचक और अनूठा तरीका है जिसमें रचनात्मकता का सहारा लेकर चिकित्सा की प्रक्रिया को सुधारा जाता है।

पर्ल सचदेवा
SC

बहाने बनाने की कला

कल कक्षा के समय हमारी कार्य पुस्तिका छात्रावास में छूट गई और हमने सिफारिश करते हुए अध्यापिका जी से कहा - मैडम कल पक्का दे देंगे! अब ये तो हमें ही पता था कि यह कल तो कभी नहीं आने वाला है। कहीं सुना है कि “कला से जीवन है और जीवन से कला” इस प्रकार की अद्भुत कलाएँ तो हमारे भीतर भी विद्यमान हैं और इन्हीं कलाओं में से सबसे प्रसिद्ध एवं प्रचलित कला है 'बहाने बनाने की कला’ जिसमें हम भोले -भाले वैल्हमाइट्स बड़े सिद्धहस्त हैं। परीक्षाओं के मौसम में हमारे अंदर कितना ही प्रथम स्थान प्राप्त करने का उत्साह क्यों न हो,अंदर से तो हम आलस की मूर्तियाँ हैं।

जितना दिमाग हमारा बहाने बनाने में चलता है यदि उतनी कुछ पढ़ाई भी कर लेते, तो कभी प्रोजेक्ट की डेडलाइन बढ़वाने के लिए संघर्ष नहीं करते और हम अभी अगले आइन्स्टाइन ही होते। कभी कभी तो हमारा गृह कार्य चोरी हो जाता है तो कभी चिड़िया उड़ाकर ले जाती है और कभी कभी तो दूसरे विषय की अध्यापिका के पास भी गलती से चला जाता है। कोई माने या ना माने पर यही परम सत्य है। जैसे ब्रह्माण्ड का कोई अंत नहीं है वैसे ही हमारे बहानो का कोई अंत नहीं है |हमारी कला सुबह से शुरू होती है और 'मॉर्निंग स्पोर्ट्स' की फिक्र होती है। 'दीदी, मेरे पेट में दर्द है', और मेरा पैर भी नहीं हिल रहा!

हम वैल्हमाइट्स ने बहानेबाजी में महारत हासिल की है, इसलिए 'बहाना बनाने की प्रतियोगिता' आयोजित करने और सर्वश्रेष्ठ को 'मिस बहानेबाज की कला' का खिताब देने का विचार है। आपका इस विषय पर क्या विचार है !

प्रिशा एवं अनंता
AI

तोल मोल के बोल

क्या आपने कभी इस विषय पर विचार किया है कि श्री राम ने चौदह वर्ष का वनवास क्यों काटा? कहने को तो सारा दोष केकैयी का था किन्तु केकैयी की दासी मन्थरा ने यदि छल पूर्वक कैकयी को अपने शब्दों के जाल में फँसाया ही नहीं होता तो शायद श्री राम वन में न भटकते और अयोध्या का राजसिंहासन विभूषित करते। इतिहास साक्षी है कि ऐसी कला जिसमें किसी की दुनिया तक पलटने का बल हो वह है किसी को अपने शब्दों से बहलाने की कला। यह एक ऐसा कार्य है जो अत्यंत कुटिलता और बुद्धिमत्ता से किया जाता है।

किसी को इस बात का विश्वास दिलाना कि जो मेरे लिए सर्वोत्तम है, वही आपके लिए है, कोई सरल कार्य नहीं होता। किसी का ह्रदय परिवर्तित करके उसकी विचारधारा बदल पाना किसी हुनर से कम थोड़ी न है। मनुष्य अपने भीतर की इस कला का प्रयोग सदियों से करते आ रहा है और करता भी रहेगा, अब चाहे वह मनुहार या चापलूसी से ही करें या फिर स्वयं की बुद्धिमता से।

यह शब्दों का जाल ही तो है जो चाशनी में लिपटा हुआ रहता है और ज़्यादा मीठा भी होता है किन्तु कभी कभी जानलेवा भी सिद्ध होता है। शब्दजाल से बचने के लिए जरूरी है बोलने वाले की मंशा परखी जाये! जो सच बोलता है वह सिर्फ प्रशंसा ही नहीं करता अपितु आपकी कमी को भी व्यक्त करता है। शब्दों की बात की जाए तो ‘शब्द’ बहुत ताक़तवर हैं। ये शब्द ही हैं जो प्रेम का बीज बो देते हैं, तो वैमनस्य भी बढ़ा देते हैं। सम्मान हो या अपमान, दोनों ही शब्दों द्वारा होता है। इसलिए तो कहा गया है कि पहले तोलिए फिर बोलिए। आए दिन देखने-सुनने में आता है कि अमुक हस्ती ने अपने शब्दों को वापस लिया या अपने कहे पर क्षमा माँगी। शब्द जितने गरिमामय होंगे, कहने वाले का व्यक्तित्व भी उतना ही सम्माननीय और गरिमापूर्ण बनकर उभरेगा। बड़े से बड़ा वक्ता हो, लेखक हो या कोई भी हस्ती, वह शब्दों के इस्तेमाल पर कड़ी नज़र रखता है, क्योंकि एक भी नकारात्मक या अनुपयुक्त शब्द उसकी छवि को दाग़दार कर सकता है, या सही इस्तेमाल उसे शीर्ष पर भी पहुँचा सकता है। यह शब्द की ताक़त है। किन्तु तब, जब बोल मिश्री से मीठे हो,और उनमें प्रेम का संदेश भी हो।

समायरा भाटिया
AI

रंगमंच से विचारों की उड़ान: अभिनय के प्रसंग

हाल ही में, मेरे घर कुछ रिश्तेदार आए थे और उन्होंने मुझसे मेरे करियर और रुचियों के बारे में प्रश्न पूछे। मैंने उन्हें बताया कि मुझे वास्तव में नाट्यशास्त्र में बहुत रुचि है और मैं इसे अपने करियर का माध्यम बनाने का विचार कर रही हूँ। उन्होंने फिर से उसी प्रश्न को दोहराया, "बेटा, मुझे तुम्हारे करियर विकल्प में रुचि है, न कि उन चीज़ों पर जिसमें तुम्हारी रुचि है।" मैंने अपने उत्तर में कहा, "यह एक महत्वपूर्ण अवसर है जिसमें मैं अपनी रचनात्मकता का पूर्ण उपयोग कर सकती हूँ साथ ही अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकती हूँ और चुनौतियों का सामना भी कर सकती हूँ ।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं जहाँ लोगों को मनोरंजन उद्योग में करियर बनाने के लिए अपने -परिवारों से सामना करना पड़ा है, या उन्हें प्रतिरोध या अस्वीकृति का सामना करना पड़ा है। एक ऐसा उदाहरण है शाहरुख खान का, जिन्हें 'बॉलीवुड का बादशाह' कहा जाता है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत में बड़ी मुश्किलों का सामना किया। उनका परिवार उनकी अभिनय की कला का समर्थन नहीं करता था, और उन्हें अधिक स्थिर और पारंपरिक करियर के प्रति प्रेरित करता था लेकिन, वे निरंतरता, समर्पण, और प्रतिभा के साथ अपने सपनों को पूरा करने में सफल रहे और बॉलीवुड के उच्चतम शिखर पर पहुँच गए।

ये सिर्फ कुछ उदाहरण हैं, लेकिन ये वास्तव में उन चुनौतियों का संवेदनशील विवरण है जिन्हें कुछ बॉलीवुड अभिनेताओं को अपने अभिनय करियर की शुरुआत में पारिवारिक समर्थन प्राप्त करने में सामना करना पड़ा है। कई अभिनेताओं ने अपनी दृढ़ता, समर्पण, और प्रतिभा पर विश्वास रखकर इन चुनौतियों का मुकाबला किया है और उन्हें पार किया है।

यह वास्तव में एक कलाकार की प्रतिभा और रचनात्मकता है जो मनोरंजन की दुनिया में वास्तव में मायने रखती है। किसी के किसी भी फायदे या नुकसान के बावजूद, चाहे वह भाई-भतीजावाद हो या उसका अभाव, अंततः जो चीज चमकती है वह कलात्मकता की गुणवत्ता है। "कला मनुष्य के आत्मा की गहराई को स्पर्श करती है, उसे एक नई पहचान और समझ प्रदान करती है।"

ध्वनि मोदी
AI

शब्दाहार

रंग शब्द के रंग निराले

रंग शब्द सुनकर लाल, पीला, हरा, नीला रंग ही ध्यान में आता है, किंतु रंग शब्द का परिवार बिल्कुल छोटा नहीं है। रंग शब्द के अनेक अर्थ हैं। कपड़ा रंगने वाला हिंदी में रंगकार होता है और फ़ारसी में रंगरेज़। स्त्री है तो रंगरेज़िन। रंगने के काम का भाव या सरल अर्थों में रंगने की मज़दूरी रंगाई है। रंगाई से आजीविका चलाने वाले रंगसाज को रंगाजीवी भी कहते हैं। संस्कृत के रंग में क्षेत्र जुड़ जाए तो अभिनय स्थल, उत्सव या समारोह का अर्थ ध्वनित होता है। जिस स्थान पर अभिनय या नाट्य किया जाए वह रंगगृह, रंगमंच एवं रंगभूमि है। अभिनय करने वाला रंगचर होता है। जिस स्थान से रंगमंच में प्रवेश किया जाए वह रंगद्वार है। किसी नाटक की प्रस्तावना को भी रंगद्वार कह सकते हैं। नृत्यशाला रंगपीठ है। अभिनय के लिए कोई पात्र मंच पर आए तो वह रंगप्रवेश कहलाएगा। रंगभूमि ही रंगमंडप भी है, नाट्यशाला भी है और युद्धक्षेत्र भी।

रंगमंच अभिनेताओं का है और चित्रों में रंग भरना चित्रकार की शोभा है। ये दोनों रंगजीवक कहलाते हैं। अनेक रंगों से युक्त रंगबिरंगा है और दीवारों को चित्र बनाकर रंगबिरंगा कर देने वाले रंगभरिया होते हैं।

मुहावरों में भी रंग बड़ा समृद्ध है। रंग चढ़ना और रंग आना मुहावरे हैं अर्थात भली-भाँति रंग लग जाना या रंगों में डूब जाना। किंतु, यदि रंग मचे तो उसका एक अर्थ रणक्षेत्र में भीषण युद्ध का होना भी होता है। किसी के प्रभाव में कोई आ जाए या किसी के अनुकूल आचरण करने लगे तो रंग में ढलना कहलाता है। बना-बनाया खेल बिगड़ जाए तो रंग में भंग पड़ जाता है। कोई तन्मय हो जाए तो रंग में रंग जाता है। ये रंग ही तो हैं, जो हर किसी को अपने रंग में रंग देना जानते हैं।

ऋतु पाठक
हिन्दी विभाग

मधुर स्मृतियाँ : प्रिय परमार सर

आर यू सिली, चाइल्ड?" इस कथन को सुनते सुनते हमने अपना पूरा प्री.एस.सी वर्ष बिता दिया। अनूठी स्मृतियाँ एवं अनूठे पल हमने परमार सर के साथ व्यतीत किए। सर, आप वैल्हम के सब से उज्ज्वल सितारे थे और आपकी रोशनी हम सब के हृदय को आज भी उल्लसित कर देती है। अपने विषय के प्रति आपका प्रेम, संकल्प और समर्पण हम सभी को विस्मित कर देता था। जब हम अपनी छुट्टियों को सोने में और घूमने में व्यर्थ करते थे, तब आप प्रतिदिन सोलह घंटे "क्वांटम फिजिक्स" का अध्ययन करते रहते ।

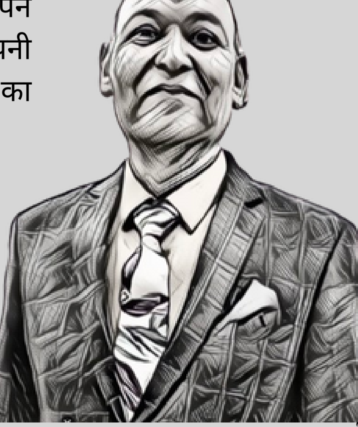

आपकी रचनात्मकता हमारे परीक्षा प्रश्नपत्र में स्पष्ट रूप से झलकती थी, जैसे- अगर टार्ज़न की 'गर्लफ्रेंड' दूसरी 'बिल्डिंग' पर है तो उसे कितनी लंबी छलाँग लगानी पड़ेगी? या 'फिजिक्स' का कठिन 'पेपर' देखकर ऐ.वी.सी.' का तापमान कितना बढेगा ? आपके रंगीन वस्त्र देखकर हमारा चेहरा रोज़ सुबह खिल उठता था। आप केवल एक शिक्षक ही नहीं थे अपितु निरंतर हमें प्रेरित करने वाले पिता के समान थे ।आपके लिए हमारा प्रेम अमूल्य है। आप आज हमारे साथ नहीं हैं किन्तु आप विद्यालय के हृदय में आज भी विद्यमान हैं और हमेशा रहेंगे।

आरुनी गर्ग एवं रितिज्ञा अग्रवाल
SC

बी टूज का शब्द भंडार !

वैल्हम के शब्दकोश में कुछ ऐसे अनोखे शब्द हैं जिनकी शब्दावली केवल वैल्हमाइट्स ही समझ सकती हैं लेकिन कुछ दिन पहले आई नए बीटूज ने उनको कुछ इस प्रकार समझा -

स्कैन्डी
स्कूल में मिलने वाली कैन्डी।
सीनियर की किताबें ।
हानिकारक कैन्डी।

सोशल सर्विस
- स्कूल की सफाई करना।
- जरुरतमन्द लोगों तक सामान पहुँचाना।

नसरीन
- नसरीन मैम का कार्यालय
- मूवी देखने का हॉल

बी बी सी
जहाँ समाचार सुने जाते हैं।
जहाँ कुछ रिकॉर्डिंग होती है।

बी टूज का ज्ञानवर्धन करने हेतु इन शब्दों के असली अर्थ

स्कैन्डी - बन और सब्जियों से बनाया गया वैल्हम का अनोखा पकवान।
सोशल सर्विस – नए - नए पकवान चखने का एक विशेष दिन।
नसरीन – प्रधानाचार्या महोदया के कार्यालय वाला भवन ।
बी बी सी – बास्केट बॉल कोर्ट

मन की भाषा

खुशी के आँसू हँसता इमोजी का सफरनामा

मोबाइल से संदेश भेजना हो या सोशल मीडिया पर कोई भाव व्यक्त करना हो – सबसे पहले हम उस भाव के लिए एक इमोजी खोजते हैं। ख़ुशी हो या दु:ख, खाने से लेकर घूमने तक के लिए सारे इमोजी हैं। यही कारण है कि इमोजी आज डिजिटल दुनिया की पहली भाषा बन गई है। जापानी भाषा के इ+मोजी यानी पिक्चर+कैरेक्टर से मिलकर बनता है “इमोजी”। ये होते तो छोटे हैं, लेकिन इनमें हमारी भावनाओं को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता होती है। इनका रंग पीला होता है, क्योंकि पीले रंग को उत्साह, हँसी-मजाक और ख़ुशी के रूप में देखा जाता है। इस रंग में भावनाएँ सुंदर प्रकार से व्यक्त होती हैं। ख़ुशी के आँसू के साथ हँसता हुआ इमोजी दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रयोग किया जाने वाला इमोजी है।2015 में ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी ने इस इमोजी को ‘वर्ड ऑफ द ईयर’ का ख़िताब दिया था।इमोजी बनाने वाला एक जापानी नागरिक शिगेताका कुरीता था। कुरीता ने पच्चीस साल की उम्र में अपना सबसे पहला इमोजी सेट बनाया था. इसमें लगभग 176 इमोजी थे. आज शिगेताका कुरीता को पूरी दुनिया “फादर ऑफ इमोजी” के नाम से भी जानती है। शिगेताका कुरीता ने यह इमोजी एक टेलीकॉम कंपनी के लिए बनाया था। इसे इसलिए बनाया गया था ताकि लोग कम शब्दों में अपने संदेश को अच्छी प्रकार से भेज सकें. पहले एक ईमेल भेजने के लिए शब्दों की संख्या सिर्फ 250 ही निर्धारित थी और इतने शब्दों में अपनी भावनाओं को प्रकट करना आसान नहीं था। इसी मुश्किल को खत्म करने के लिए कुरीता ने पहली बार इमोजी बनाने की शुरुआत की. इसके लिए उन्होंने कॉमिक बुक, लाइटबल्ब, टिकलिंग बॉम्ब और मौसम के कई क्षेत्रों से आइडिया लिया था और फिर इन चित्रों में हँसी, क्रोध और आश्चर्य जैसे भाव दर्शाने वाले इमोजी बनाए।

यह रोचक बात हम में से बहुत कम लोगों को पता है कि हर वर्ष 17 जुलाई को 'वर्ल्ड इमोजी डे' आता है।तो चलिए हर वर्ष सत्रह जुलाई के दिन हम भी इस अनूठे इमोजी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें।

राशिका भारद्वाज
AII

मुख्य सम्पादिका
दीपिका जोशी

तकनीकी सहायक
कशिका जैन
आध्या बंसल

प्रभारी शिक्षिका
डॉ ऋतु पाठक

विशेष आभार
डॉ.नालन्दा पाण्डे एवं समस्त हिंदी विभाग

सहायक मण्डल
गौरी रावत
प्रदीपिका गुप्ता
श्रीना गुलाटी
अर्शिया अनेजा
नविका जिंदल
साची मालपानी

चित्रकार
पलक अरोड़ा
टियारा सिंह
विआ गोयल
सोहा शेख

विशेष सहायक
नव्या तलवार
जिया सिंह

हास्य प्रभारी
श्रीम मिगलानी

संपादक मंडल